IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 4, December 2025
Impact Factor: 7.67

पंडित दीनदयाल उपाध्याय और उनके विचार: एक व्यापक विश्लेषण

अनिल कुमार दुबे[1] and डॉ. दीपशिखा शर्मा[2]

[1]शोधार्थी, हिंदी-विभाग

[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी-विभाग

सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सारांश

आज की आधुनिक दुनिया एक ऐसे मॉडल की तलाश कर रही है जो अपने आप में एकरूप, एकीकृत और टिकाऊ हो। एकात्म मानववाद में वे गुण हैं जो दुनिया को पंक्ति में अंतिम व्यक्ति तक विकास की ओर ले जा सकते हैं। यह उपभोक्तावाद के नकारात्मक प्रभाव से निपटने में प्रभावी रूप से काम करेगा जिसका सामना भारत में समाज कर रहा है, लोग अपनी ज़रूरत के हिसाब से सामान और सेवाएँ नहीं खरीदते हैं बल्कि दूसरों को दिखाते हैं।

मुख्य संकेतक: - राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, भारतीय राजनीति, सामाजिक समरसता।

परिचय

विचार हथियारों से अधिक शक्तिशाली होते हैं। उनमें मानव समुदाय को सभ्य बनाने के साथ-साथ उसके नैतिक मूल्यों को नष्ट करने की भी पर्याप्त शक्ति होती है। पूंजीवाद, साम्यवाद, नाजीवाद और उदारवाद जैसे विचारों और विचारधाराओं ने मानव जीवन में व्यापक परिवर्तन किए हैं। भारत में प्राचीन काल से ही धर्म, राष्ट्र, जाति समाज और मानवता के बारे में विभिन्न प्रकार के विचार प्रस्तुत करने वाले महान विचारक रहे हैं। इन्हीं विचारकों में से एक थे पंडित दीनदयाल उपाध्याय। वे एक महान विचारक, दार्शनिक और नेता थे और उन्होंने हमारे राष्ट्र को दिशा दी। उनके एकात्म मानववाद के दर्शन ने भारतीय राजनीतिक व्यवस्था पर गहरी छाप छोड़ी। ऐसा करके उन्होंने देश के लोकतांत्रिक मूल्यों को भी मजबूत किया। वे एक ग्रामीण परिवार से थे और

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 4, December 2025 Impact Factor: 7.67

उनकी प्रारंभिक आयु कठिनाईयों और कठोर वास्तविकताओं से भरी थी। उन्होंने बचपन में ही अपने पिता और माता को खो दिया था। उनका और उनके भाई का पालन-पोषण उनके नाना ने किया था।

अपने छात्र जीवन के दौरान, वे एक मेधावी छात्र थे और उन्हें अपने शिक्षकों का आशीर्वाद प्राप्त था। सरकारी सेवा में चयनित होने के बावजूद, उन्होंने इसमें शामिल होने से इनकार कर दिया और अपना पूरा जीवन राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पित कर दिया। बाद में वे मातृभूमि की सेवा करने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में शामिल हो गए और पूर्णकालिक प्रचारक बन गए। अंततः स्वतंत्रता के बाद उन्होंने एक राजनीतिक दल के रूप में भारतीय जनसंघ (आज की भाजपा) का नेतृत्व किया। उन्होंने धर्म, भारत के आर्थिक विकास और शिक्षा आदि जैसे समकालीन मुद्दों पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

उन्होंने विदेशी शासन, विदेशी शिक्षा और विदेशी मॉडल के आर्थिक विकास की भी आलोचना की। उनका आर्थिक विकास मॉडल कुटीर उद्योग, कृषि आधारित अर्थव्यवस्था पर आधारित है और कृषि के व्यावसायीकरण की उपेक्षा करता है तथा आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था का पक्षधर है। उनका मुख्य ध्यान राष्ट्र को अपनी विरासत, मूल्यों और आवश्यकताओं के अनुसार विकसित करना था। वे मध्यकालीन युग से नष्ट हो चुके राष्ट्र के गौरव को वापस लाना चाहते थे।

उनका मानना था कि देश और समाज को मजबूत करने का एकमात्र तरीका उनकी सोच को स्वतंत्र बनाना है। वास्तव में उन्हें मनोवैज्ञानिक रूप से स्वतंत्र बनाने के लिए उन्होंने अलग-अलग मॉडल की शिक्षा का समर्थन किया क्योंकि उन्होंने दर्शाया कि शिक्षा मातृभाषा और स्वदेशी संस्कृति में दी जानी चाहिए। हालाँकि, उनके राजनीतिक विचारों को पर्याप्त ध्यान नहीं मिला। इन सभी कारकों के बावजूद उनके विचारों की अपनी प्रासंगिकता है और वे महात्मा गांधी के विचारों से काफी मिलते-जुलते हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी और उनका एकात्म मानववाद का दर्शन: -

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद का यह विचार दिया है। उपाध्याय ने पूंजी के राजनीतिक और सामाजिक दर्शन का विरोध किया है, साथ ही साम्यवाद की अपनी सामाजिक संस्कृति और दार्शनिक मूल्य हैं, जिन्हें आम तौर पर रीति कहा जाता है। हर समाज की कुछ विशिष्टताएँ होती हैं, जिन्हें पहचाना जा सकता है। हर व्यक्ति की एक अलग भूमिका और विभिन्न गतिविधियाँ होती हैं। इन विभिन्न पहलुओं को एक-दूसरे के साथ एकीकृत करना एकात्म मानववाद है। अंततः इस दर्शन का उद्देश्य प्रत्येक मनुष्य के लिए

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 4, December 2025 Impact Factor: 7.67

सम्मानजनक जीवन सुनिश्चित करना है। इसका एक व्यापक उद्देश्य स्वदेशी सामाजिक आर्थिक मॉडल प्रस्तुत करना है जो मानव के इर्द-गिर्द घूमता है। निम्नलिखित तीन सिद्धांत एकात्म मानववाद के मूल हैं: -

1. समग्र का प्राथमिक
2. धर्म की सर्वोच्चता
3. समाज की स्वायत्तता

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन और राष्ट्र के लिए कार्य: -

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन दुर्भाग्य से बहुत कठिन रहा क्योंकि उन्होंने तीन वर्ष की आयु में अपने पिता को खो दिया था। बाद में उनकी मां का निधन हो गया जिन्हें तपेदिक का पता चला था, हालांकि ऐसी घटनाएं उनके शैक्षणिक प्रदर्शन पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं डाल पाईं। उन्होंने हमेशा अपने शिक्षाविदों में अच्छा प्रदर्शन किया। उन्होंने प्रशासनिक सेवा की परीक्षा सफलतापूर्वक उत्तीर्ण की, लेकिन इसमें शामिल नहीं हुए। उस समय, दीनदयाल उपाध्याय देश में मौजूदा परिस्थितियों से बहुत परेशान थे। वह विदेशी शासन के खिलाफ थे, लेकिन उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी के नेतृत्व में भाग लेने से इनकार कर दिया। उन्होंने अपना पूरा जीवन देश की सेवा में समर्पित कर दिया। 1940 में उन्होंने हमारे कट्टरपंथी मुसलमानों द्वारा पाकिस्तान की तीव्र मांग का विरोध किया और वह हिंदू समाज को एकीकृत करना चाहते थे, इसलिए वे आरएसएस में शामिल हो गए और आरएसएस में संगठनात्मक पदानुक्रम के विभिन्न पदों पर अकेले काम किया।

भारतीय संस्कृति पर उनके विचार:

किसी भी राष्ट्र की संस्कृति उस राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों, आचार-विचार, रीति-रिवाजों और सामाजिक मूल्यों के अंतर्गत विकसित होती है। हम आसानी से समझ सकते हैं कि ये विभिन्न पहलू भारतीय संस्कृति पर भी अपनी छाप छोड़ते हैं। दीनदयाल उपाध्याय स्वभाव से राजनीतिज्ञ नहीं थे, लेकिन वे भारतीय संस्कृति के दृढ़ विश्वासी थे। राजनीति में प्रवेश करने का उनका उद्देश्य केवल भारतीय संस्कृति की रक्षा तक ही सीमित था। भारत को 1947 में स्वतंत्रता मिली। अंग्रेजों ने यहां अपनी संस्कृति, परंपरा, मूल्यों, शिक्षा और भाषा की गहरी छाप छोड़ी। इस प्रकार स्वतंत्रता केवल राजनीतिक क्षेत्र तक ही सीमित थी, लेकिन इसमें आर्थिक, बौद्धिक और शैक्षिक स्वतंत्रता शामिल थी, जो अभी तक प्राप्त नहीं हुई थी। उन्होंने भारतीय संस्कृति को अन्य संस्कृतियों से

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 4, December 2025 Impact Factor: 7.67

अलग माना। निम्नलिखित कारणों से। 1. इसने मानवता और वशुदेव कुटुम्बक का संदेश दिया और कभी दूसरों के अधिकार क्षेत्र को बढ़ावा नहीं दिया। 2. भारत वह है जिसने पूरे विश्व को एकता और भाईचारे का संदेश दिया

धर्म का अर्थ:

उपाध्याय के लिए धर्म कोई धर्म नहीं है। वास्तव में धर्म उनके लिए एक व्यापक शब्द है जिसका अर्थ है अनेक धर्म। उनके लिए धर्म एक पूजा पद्धति है और इस देश में अनेक धर्म हैं। हालांकि इन सभी धर्मों, संप्रदायों और पूजा पद्धतियों के बावजूद धर्म एक ही है। उनका मानना था कि धर्म वह है जो सबके लिए अच्छा हो और फिर उसे मोक्ष से दूर ले जाए। धर्म वह है जो पूरे विश्व को बनाए रखता है। यह जीवन के सभी आयामों से संबंधित है। उनका मानना था कि धर्म केवल बहुमत या लोगों के साथ ही नहीं है बल्कि धर्म सार्वभौमिक और शाश्वत भी है। उनके अनुसार लोकतांत्रिक सरकार की परिभाषा में, लोगों की, लोगों द्वारा और लोगों के लिए सरकार, 'लोगों की स्वतंत्रता के लिए, लोकतंत्र के लिए और धर्म के लिए है।' धर्म में पूरे विश्व को सक्रिय रखने के लिए पर्याप्त नैतिक और नैतिक मूल्य हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय और आर्थिक विकास:

उनका आर्थिक दर्शन स्वदेशी उत्पादन और आर्थिक लोकतंत्र पर आधारित है। उनके अनुसार अर्थव्यवस्था को इस तरह से विकसित नहीं किया जाना चाहिए जिससे मनुष्य की मानवता कमजोर हो। उनके अनुसार अर्थव्यवस्था का उद्देश्य लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति तथा जीवन का विकास करना है। वस्तुओं का उत्पादन उतना ही होना चाहिए, जितनी आवश्यकता हो। वे कहते थे कि देश को इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि उत्पादन के बाद उपभोग हो। वे प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित दोहन के पक्षधर थे। उनका मानना था कि हमें प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करने के बजाय उनका उपयोग करना चाहिए।

यदि उत्पादन असीमित रूप से बढ़ता है, तो वह अपने आप कायम नहीं रह पाएगा। इसलिए उतना ही उत्पादन करें, जिसकी पूर्ति प्रकृति स्वयं कर सके। कृषि आधारित अर्थव्यवस्था के प्रति उनका दृष्टिकोण बहुत सकारात्मक था। उनके अनुसार, बड़ी अर्थव्यवस्थाएं सतत विकास के लिए उपयुक्त नहीं हैं। भूमि पर स्वामित्व का अधिकार किसानों को दिया जाना चाहिए। वे सहकारी कृषि के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने देश में खाद्यान्नों के व्यावसायीकरण की उपेक्षा की, क्योंकि इससे गरीबी बढ़ेगी। वे देश की आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था के पक्षधर

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 4, December 2025 Impact Factor: 7.67

थे, जिसमें आयात पर निर्भरता कम से कम हो। उनका तर्क था कि मशीनें मनुष्य की सहायक हो सकती हैं, लेकिन प्रतिस्पर्धी नहीं, क्योंकि इनके प्रयोग से बेरोजगारी बढ़ेगी। इस संबंध में उनके विचार महात्मा गांधी से मिलते-जुलते थे।

उनके अनुसार कुटीर उद्योग विकास का आधार होने चाहिए। उन्होंने नेहरू सरकार की पहली और दूसरी पंचवर्षीय योजना का तर्कपूर्ण विश्लेषण किया। वे तीव्र विकास के पक्ष में नहीं थे, बल्कि सामान्य और क्रमिक विकास दर के पक्षधर थे। उन्हें अर्थव्यवस्था के दोनों मॉडल पसंद नहीं थे, साम्यवादी और पूंजीवादी। उन्होंने मानव के संतुलित विकास पर ध्यान केंद्रित किया, जिससे देश में समृद्धि आए। उनका आर्थिक दर्शन हमारी वर्तमान आर्थिक चिंताओं को हल करने में मददगार साबित हो सकता है। उनके अनुसार आर्थिक विकास का केंद्र मानवीय जरूरतें होनी चाहिए, न कि मानवीय लालच। उनकी प्रसिद्ध पुस्तकें निम्नलिखित हैं: -

1. राजनीतिक डायरी
2. राष्ट्र चिंतन

दीनदयाल जी और गांधी जी के बीच विकास मॉडल पर समानताएं: -

उनका आर्थिक विकास का मॉडल गांधी जी के आर्थिक विकास के मॉडल से काफी मिलता जुलता लगता है। यह उनके प्रसिद्ध विचार पर आधारित था। विचार यह था कि, "पृथ्वी के पास सभी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कुशल संसाधन हैं, न कि सभी के लालच को।" सरल शब्दों में हम कह सकते हैं कि देश में हमेशा जनसंख्या के अनुपात में पर्याप्त संसाधन होते हैं। एक और प्रमुख बात यह है कि वे दोनों कुटीर उद्योगों के विकास के समर्थक थे। निश्चित रूप से यह देश को ग्रामीण गरीबी और बेरोजगारी से मुक्त करने के लिए पर्याप्त हो सकता है। लेकिन विडंबना यह है कि स्वतंत्रता के बाद से किसी भी सरकार ने इस संबंध में ईमानदार कदम नहीं उठाया। ये दोनों महान नेता प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहकारी कृषि के पक्ष में थे। सहकारी खेती खेती करने की एक ऐसी पद्धति है जिसमें एक गांव के सभी किसान मिलकर काम करते हैं और उत्पादन करते हैं।

उत्पादन को किसानों के बीच बराबर के आधार पर बांटा जाता है। इस तरह के अभ्यास में संसाधनों को खींचा जाता है और इसका अधिकतम उपयोग किया जा सकता है। हालाँकि, इस प्रथा को भारत के कई राज्यों ने लागू किया है, लेकिन कुछ मुद्दों के कारण यह बहुत प्रभावी साबित नहीं हुआ है। इन सबके बावजूद, सहकारी खेती के उनके विचार को पूरी तरह से नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 4, December 2025 Impact Factor: 7.67

सिंचित भूमि होने के बावजूद वैश्विक कृषि-आधारित वस्तु निर्यात में हमारी हिस्सेदारी सिर्फ 3% है। इसका एक कारण यह है कि भारत के पास कृषि उपज निर्यात नीति स्थिर नहीं है जो हमारे किसानों के हितों की रक्षा करती हो। सरकार आम तौर पर उन उपभोक्ताओं की तरफ झुकती है जो स्वभाव से अधिक मुखर होते हैं। इस तरह के रुख का हमारे निर्यात और व्यापार संतुलन पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह कहा जा सकता है कि उनके मॉडल को कभी भी सही तरीके से लागू नहीं किया गया, अन्यथा परिणाम कुछ और होते।

शिक्षा में उनका योगदान:

उनका गहरा विश्वास था कि शिक्षा ही मानव समाज में परिवर्तन और विकास लाने के लिए पर्याप्त होगी। वे एक मेधावी छात्र भी थे और उन्होंने अनेक छात्रवृत्तियाँ प्राप्त कीं। उनके मतानुसार विदेशी विचारधारा, विदेशी जीवन मूल्य और विदेशी प्रभाव किसी भी देश के विकास में बाधक होते हैं। उनका मानना था कि भारतीय शिक्षा प्रणाली में अंग्रेजी भाषा को शामिल करना राष्ट्र की भावना की अवहेलना है, इसलिए उन्होंने उस शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन को बढ़ावा दिया। उनका दृढ़ विश्वास था कि शैक्षिक और जीवन मूल्यों का विकास समाज के उद्देश्यों के अनुसार होता है। हमें अपने स्वयं के मूल्य और मूल्य तंत्र को विकसित करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा ऐसी परिस्थितियों के निर्माण में सक्षम होनी चाहिए जो छात्रों के बहुआयामी चरित्र का विकास करे। उनके शिक्षा दर्शन का मूल राष्ट्रवाद था। उनके अनुसार भारत न केवल भौगोलिक इकाइयों का बल्कि विविधता में एकता का भी प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए भारत उनके लिए एक देश से कहीं अधिक है। उन्होंने शिक्षा के एक भाग के रूप में धर्म शिक्षा का समर्थन किया और भारतीय संदर्भ में धर्मनिरपेक्ष शिक्षा की उपेक्षा की। उनके लिए धर्म केवल अनुष्ठान नहीं बल्कि नैतिक कर्तव्य और धार्मिकता भी है। समाज कल्याण और देश के विकास के लिए शिक्षा अनिवार्य थी।

उनका साहित्यिक योगदान:

पंडित दीनदयाल एक बहुमुखी प्रतिभा संपन्न व्यक्ति थे। उनका साहित्यिक योगदान बहुत व्यापक और बहु-विषयक दृष्टिकोण पर आधारित था। उन्होंने कुछ दार्शनिक पुस्तकें लिखीं। उन्होंने पहली और दूसरी पंचवर्षीय योजना की नीति, उसके वादों और प्रदर्शन का बहुत अच्छी तरह से तर्कपूर्ण विश्लेषण किया। उन्होंने भारतीय मुद्रा के अवमूल्यन के इंदिरा गांधी सरकार के फैसले की कड़ी आलोचना की और इसके प्रभाव और निहितार्थों पर एक किताब लिखी। उन्होंने डॉ. के.बी. हेडगेवार की जीवनी का मराठी से हिंदी में अनुवाद

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 4, December 2025 Impact Factor: 7.67

किया। उनके साहित्यिक योगदान निम्नलिखित हैं। 1. सम्राट चंद्रगुप्त 1946 2. अखंड भारत (1952) 3. दो योजनाएं, वादे, प्रदर्शन और दृष्टिकोण (1958) 4. अवमूल्यन: एक महान पतन (1966) 5. राष्ट्र चिंतन 6. स्वदेश (दैनिक) 7. पंचजन्य (मासिक) 8. एकात्म मानववाद: मूल तत्वों का विश्लेषण इस प्रकार, उनकी साहित्यिक रचनाएँ देश, समाज, अर्थव्यवस्था और इसकी समकालीन चिंताओं के इर्द-गिर्द घूमती हैं।

एकात्म मानववाद और वर्तमान संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता: -

एकात्म मानववाद का उद्देश्य व्यक्ति और पूरे समाज की आवश्यकताओं के बीच संतुलन स्थापित करते हुए प्रत्येक व्यक्ति के लिए सम्मानजनक जीवन सुनिश्चित करना है। यह प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के बजाय उनके सतत उपभोग का समर्थन करता है। वर्तमान में एक बहुत बड़ी आबादी गरीबी, भूख और कुपोषण के बीच अपना जीवन व्यतीत कर रही है। यदि हम आर्थिक विकास के विभिन्न मॉडलों का विश्लेषण करें तो इनमें से कोई भी मॉडल अपेक्षाओं के अनुरूप परिणाम प्रदान नहीं करता है। इसलिए, आज की आधुनिक दुनिया एक ऐसे मॉडल की तलाश कर रही है जो अपने आप में एकरूप, एकीकृत और सतत हो। एकात्म मानववाद में वे गुण हैं जो दुनिया को अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक विकास की ओर ले जा सकते हैं।

एकात्म मानववाद न केवल राजनीतिक बल्कि सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक लोकतंत्र और स्वतंत्रता को भी बढ़ाता है। यह दर्शन विविधता और स्थिरता को भी बढ़ावा देता है। यह विकास में विभाजनकारी भूमिका निभा सकता है और भारत जैसे देश के लिए विकास का सबसे उपयुक्त मॉडल प्रतीत होता है, जिसमें अनंत विविधताएं हैं। वास्तव में उनका दर्शन दुनिया के सभी अविकसित और सबसे कम विकसित देशों के लिए हमेशा प्रासंगिक रहेगा। यह भारत में समाज द्वारा सामना किए जा रहे उपभोक्तावाद के नकारात्मक प्रभाव से निपटने में प्रभावी रूप से काम करेगा, लोग अपनी ज़रूरत के अनुसार सामान और सेवाएँ नहीं खरीदते हैं, बल्कि दूसरों को दिखाते हैं। वास्तव में एकात्म मानववाद का उनका विचार वर्तमान परिदृश्य में देश के साथ-साथ दुनिया में संघर्षों को हल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। देश में, हमारे पास जाति, धर्म, क्षेत्र भाषा, जातीयता, राज्यों के बीच राजस्व का वितरण और राज्यों के बीच पानी जैसे प्राकृतिक संसाधनों आदि से संबंधित संघर्ष हैं।

इन मुद्दों को हल करने के लिए, एक सच्चे मानवतावादी बनने और दो सच्चे अर्थों में उनके मानवतावाद के मार्ग का अनुसरण करने की तत्काल आवश्यकता है। अन्यथा मानवतावाद केवल एक आदर्श विचार के रूप में सीमित रह जाएगा, जिसकी कोई सामाजिक और राजनीतिक उपयोगिता नहीं है। इसके अलावा,

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 4, December 2025 Impact Factor: 7.67

मानवतावाद का उनका विचार हम सभी को एक अंतर्निहित संदेश देता है कि 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की दौड़ में हम अपनी एक तिहाई आबादी को क्या भूल जाएंगे जो अभी भी बुनियादी जरूरतों की भारी कमी का सामना कर रही है। हम ऐसा आर्थिक विकास हासिल करके क्या करेंगे जो वास्तव में समानता की अनुमति नहीं देता है। वास्तव में, देश में समस्याओं के समाधान के लिए पश्चिम से लाए गए समाधानों को लागू करने के बजाय स्वदेशी दृष्टिकोण विकसित करने की तत्काल आवश्यकता है। अन्यथा भारतीय संस्कृति का ह्रास जारी रहेगा। पुनः, यह रेखांकित करना महत्वपूर्ण है कि दीनदयाल उपाध्याय जी जैसे प्रतिष्ठित नेता के प्रेरक विचार केवल पुस्तकों और शोध पत्रों तक ही सीमित नहीं रहने चाहिए। इन विचारों को आम नागरिकों तक पहुँचाना होगा, जिनका लक्ष्य भारत को पुनः विश्व गुरु बनाना है।

निष्कर्ष:

उन्होंने शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण योगदान दिया। गांधी जी के बाद वे शायद एकमात्र ऐसे राजनीतिक विचारक थे जिन्होंने भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा को जोड़ा। वे जन कल्याण और सनातन परंपराओं में विश्वास करते थे। समकालीन मुद्दों के प्रति उनकी समझ बहु-विषयक थी। उनका एकात्म मानववाद का दर्शन बहुत सुव्यवस्थित है। उन्होंने राजनीति को समाज कल्याण का मार्ग चुना। उन्होंने पत्रकारिता के माध्यम से अपने विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया। उन्होंने राष्ट्रवाद के नारे को सुदूर क्षेत्रों तक पहुँचाया।

संदर्भ सूची

1. धर्मसेनन एस. और के.एस. कुमार," एकात्म मानववाद भारतीय संस्कृति पर आधारित एक राजनीतिक दर्शन (2016)।
2. शर्मा एम.सी., पंडित दीनदयाल उपाध्याय, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय 2017
3. रावत, बृजेश और रुचिरा प्रसाद," आर्थिक कल्याण पर आकर्षक मानवतावाद का प्रभाव", ग्लोबल जर्नल ऑफ एंटरप्राइजेज इंफॉर्मेशन सिस्टम (2018)।
4. दीनदयाल उपाध्याय, हिंदी संस्कृति की विशिष्टता, पृष्ठ .17
5. एसपी जैन द्वारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक विचार
6. पांडे, दीपक के. (25 मई 2015),"द हिंदू, 5 जून 2018 को पुनःप्राप्त
7. "पंडित दीनदयाल उपाध्याय, एक स्वयंसेवक, पार्टी के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ पर जनसंग का

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 4, December 2025
Impact Factor: 7.67

नेतृत्व करने के लिए तैयार थे"।

8. विनय के. मनीषा गुप्ता, "पंडित दीनदयाल उपाध्याय का शैक्षिक और सामाजिक दर्शन, जनवरी.2022, खंड 9, अंक-1
9. डॉ. सरिता तिवारी, भारत का सामाजिक राजनीतिक विचार, एम.जी.सी.यू., मोतिहारी (बिहार)
10. ए नैन, एसके शर्मा, दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद और उसकी समकालीन प्रासंगिकता, मार्च